UP Board Exam 2021-22 Special Hindi Notes

कक्षा -10

शब्द- शब्द का तोड़-तोड़कर
हर लाइन का अलग अलग
हिंदी अनुवाद

100%
पेपर यहीं से

हिंदी

30% कम किए गए कोविड-19 पाठ्यक्रम २०२२ पर आधारित

जितने पाठ महत्वपूर्ण हैं बस उतने ही पाठों का संकलन |

अनिवार्य संस्कृत भाग

नाम मात्र की रेट पर उपलब्ध

अभी खरीदें
www.gyansindhuclasses.com
पर उपलब्ध

प्रथमः पाठः - वाराणसी

सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य - पुस्तक ' संस्कृत परिचायिका ' के ' वाराणसी ' नामक पाठ से लिया गया है । इसमें वाराणसी नगर की शोभा का वर्णन किया गया है ।

....

वाराणसी सुविख्याता प्राचीना नगरी ।

वाराणसी अत्यधिक विख्यात प्राचीन नगरी है ।

इयं विमलसलिलतरङ्गायाः गङ्गायाः कूले स्थिता ।

यह स्वच्छ जल की तरंगोंवाली गंगा के किनारे स्थित है ।

अस्याः घट्टानां वलयाकृतिः पंक्तिः धवलायां चन्द्रिकायां बहु राजते ।

इसके घाटों की घुमावदार आकृतिवाली पंक्ति श्वेत चाँदनी में बहुत सुन्दर लगती है ।

अगणिताः पर्यटकाः सुदूरेभ्यः देशेभ्यः नित्यम् अत्र आयान्ति , अस्याः घट्टानाञ्च शोभां विलोक्य इमां बहु प्रशंसन्ति ।

दूर - दूर के देशों से असंख्य पर्यटक यहाँ नित्य प्रति आते हैं और इसके घाटों की शोभा को देखकर इसकी बहुत प्रशंसा करते हैं ।

वाराणस्यां प्राचीनकालादेव गेहे गेहे विद्यायाः दिव्यं ज्योतिः द्योतते ।

वाराणसी में प्राचीनकाल से ही घर - घर में विद्या की अलौकिक ज्योति प्रकाशित है ।

अधुनाऽपि अत्र संस्कृतवाग्धारा सततं प्रवहति , जनानां ज्ञानञ्च वर्द्धयति ।

अब भी यहाँ संस्कृत - वाणी की धारा निरन्तर बह रही है और लोगों के ज्ञान को बढ़ा रही है ।

अत्र अनेके आचार्याः मूर्धन्याः विद्वांसः वैदिकवाङ्मयस्य अध्ययने अध्यापने च इदानीं निरताः ।

इस समय यहाँ अनेक आचार्य , उच्च कोटि के विद्वान् वैदिक - साहित्य के अध्ययन - अध्यापन में लगे हुए हैं ।

न केवलं भारतीयाः अपितु वैदेशिकाः गीर्वाणवाण्याः अध्ययनाय अत्र आगच्छन्ति , निःशुल्कं च विद्यां गृह्णन्ति ।

न केवल भारतीय अपितु विदेशी भी देववाणी - संस्कृत के अध्ययन के लिए यहाँ आते हैं और निःशुल्क विद्या ग्रहण करते हैं ।

अत्र हिन्दूविश्वविद्यालयः , संस्कृतविश्वविद्यालयः , काशीविद्यापीठम् इत्येते त्रयः विश्वविद्यालयाः सन्ति , येषु नवीनानां प्राचीनानाञ्च ज्ञानविज्ञानविषयाणाम् अध्ययनं प्रचलितः ।

यहाँ हिन्दू विश्वविद्यालय , संस्कृत विश्वविद्यालय और काशी विद्यापीठ - ये तीन विश्वविद्यालय हैं , जिनमें नवीन और प्राचीन ज्ञान - विज्ञान के विषयों का अध्ययन चलता रहता है ।

एषा नगरी भारतीयसंस्कृतेः संस्कृतभाषायाश्च केन्द्रस्थलम् अस्ति ।

यह नगरी भारतीय संस्कृति और संस्कृत - भाषा का केन्द्र - स्थल है ।

इत एव संस्कृतवाङ्मयस्य संस्कृतेश्च आलोकः सर्वत्र प्रसृतः ।

यहीं से संस्कृत - साहित्य और संस्कृति का प्रकाश सर्वत्र फैला है ।

मुगलयुवराजः दाराशिकोहः अत्रागत्य भारतीय - दर्शन - शास्त्राणाम् अध्ययनम् अकरोत् ।

मुगल युवराज दारा शिकोह ने यहाँ आकर भारतीय दर्शनशास्त्रों का अध्ययन किया था ।

स तेषां ज्ञानेन तथा प्रभावितः अभवत् , यत् तेन उपनिषदाम् अनुवादः पारसीभाषायां कारितः ।

वह उनके ज्ञान से ऐसा प्रभावित हुआ कि उसने उपनिषदों का अनुवाद फारसी भाषा में कराया।

इयं नगरी विविधधर्माणां संगमस्थली।

यह नगरी अनेक धर्मों की संगमस्थली है।

महात्मा बुद्धः , तीर्थङ्करः पार्श्वनाथः , शङ्कराचार्यः , कबीरः , गोस्वामी तुलसीदासः , अन्ये च बहवः महात्मानः अत्रागत्य स्वीयान् विचारान् प्रासारयन्।

महात्मा बुद्ध , तीर्थंकर पार्श्वनाथ , शंकराचार्य , कबीर , गोस्वामी तुलसीदास और दूसरे अनेक महात्माओं ने यहाँ आकर अपने विचारों का प्रसार किया।

न केवलं दर्शने , साहित्ये , धर्मे , अपितु कलाक्षेत्रेऽपि इयं नगरी विविधानां कलानां , शिल्पानाञ्च कृते लोके विश्रुता।

न केवल दर्शन , साहित्य और धर्म में ही अपितु कला के क्षेत्र में भी यह नगरी तरह - तरह की कलाओं और शिल्पों के लिए विश्व में प्रसिद्ध है।

अत्रत्याः कौशेयशाटिकाः देशे देशे सर्वत्र स्पृह्यन्ते।

यहाँ की रेशमी साड़ियाँ हर देश में सर्वत्र पसन्द की जाती हैं।

अत्रत्याः प्रस्तरमूर्तयः प्रथिताः।

यहाँ की पत्थर की मूर्तियाँ प्रसिद्ध हैं।

इयं निजां प्राचीनपरम्पराम् इदानीमपि परिपालयति — तथैव गीयते कविभिः-

यह अपनी प्राचीन परम्परा का इस समय भी पालन कर रही है। अतएव कवियों के द्वारा गाया गया है -

मङ्गलं मरणं यत्र विभूतिर्यत्र भूषणम्।

जहाँ मरना कल्याणकारी है , जहाँ भस्म ही आभूषण है और जहाँ लँगोट (ही) रेशमी वस्त्र है ,

कौपीनं यत्र कौशेयं काशी केनोपमायते॥

वह काशी किसके द्वारा मापी जा सकती है ? (इसकी तुलना किससे की जा सकती है ?

आवश्यक बात – इस पाठ का अनुवाद हर वाक्य अलग कर के किया गया है |यदि कोई समस्या हो तो दिए गए लिंक पर क्लिक कर के वीडियो के माध्यम से समझें| यदि आप प्रिंटेड पेपर पढ़ रहे हैं तो Gyansindhu Coaching Classes यूट्यूब चैनल पर जाकर कक्षा 10 हिंदी की प्लेलिस्ट देखें |

तृतीय : पाठः - वीरः वीरेण पूज्यते

(वीर के द्वारा वीर की पूजा की जाती है) .

सन्दर्भ - प्रस्तुत नाट्य - खण्ड हमारी पाठ्य - पुस्तक ' संस्कृत परिचायिका ' के ' वीरः वीरेण पूज्यते ' नामक पाठ से लिया गया है।

- (स्थानम् - अलक्षेन्द्रस्य सैन्य शिविरम्।

  (स्थान - सिकन्दर का सैनिक शिविर)।

- अलक्षेन्द्रः आम्भीकः च आसीनो वर्तते।

  सिकन्दर और आम्भीक बैठे हैं।

- वन्दिनं पुरुराजम् अग्रेकृत्वा एकतः प्रविशति यवन - सेनापतिः ।

  बन्दी पुरुराज को आगे करके एक ओर से यवन सेनापति प्रवेश करता है ।)
- सेनापतिः : विजयतां सम्राट् ।

  सेनापति - सम्राट् की जय हो !
- पुरुराजः : एष भारतवीरोऽपि यवनराजम् अभिवादयते ।

  पुरुराज - यह भारतवीर भी यवनराज का अभिवादन करता है ।
- अलक्षेन्द्रः : (साक्षेपम्) अहो ! बन्धनगतः अपि आत्मानं वीर इति मन्यसे पुरुराज ?

  सिकन्दर –(आक्षेप सहित) अरे ! पुरुराज ! बन्धन में पड़े हुए भी अपने को वीर मानते हो ?
- पुरुराजः : यवनराज ! सिंहस्तु सिंह एव , वने वा भवतु पञ्जरे वा ।

  पुरुराज हे यवनराज ! सिंह तो सिंह ही है , वन में हो अथवा पिंजरे में ।
- अलक्षेन्द्रः : किन्तु पञ्जरस्थः सिंहः न किमपि पराक्रमते ।

  सिकन्दर – किन्तु पिंजरे में पड़ा हुआ सिंह कुछ भी पराक्रम नहीं करता है ।
- पुरुराजः : पराक्रमते , यदि अवसरं लभते । अपि च यवनराज !

  पुरुराज - पराक्रम करता है , यदि अवसर मिलता है । और हे यवनराज !
- बन्धनं मरणं वापि जयो वापि पराजयः ।

  “ बन्धन हो अथवा मृत्यु , जय हो अथवा पराजय ; "
- उभयत्र समो वीरः वीर भावो हि वीरता ।।

  वीर पुरुष दोनों स्थितियों में समान रहता है । वीर - भाव को ही ' वीरता ' कहते हैं ।
- अम्भिराजः सम्राट ! वाचाल एष हन्तव्यः ।

  आम्भिराज - सम्राट् ! यह वाचाल मार डालने के योग्य है ।
- सेनापतिः : आदिशतु सम्राट् ।

  सिकन्दर –सेनापति - सम्राट् आज्ञा दें ।
- अलक्षेन्द्रः : अथ मम मैत्रीसन्धे अस्वीकरणे तव किम् अभिमतम् आसीत् पुरुराज !

  सिकन्दर - हे पुरुराज ! मेरी मैत्री - सन्धि के अस्वीकार करने में तुम्हारी क्या इच्छा थी ?
- पुरुराजः : स्वराज्यस्य रक्षा , राष्ट्रद्रोहाच्च मुक्तिः ।

  पुरुराज - अपने राज्य की रक्षा और राष्ट्रद्रोह से मुक्ति ।
- अलक्षेन्द्रः : मैत्रीकरणेऽपि गष्ट्रद्रोहः ?

  सिकन्दर - मित्रता करने में भी राष्ट्रद्रोह ?
- पुरुराजः : आम् गष्ट्रद्रोहः यवनराज !

  पुरुराज - हाँ । राष्ट्रद्रोह । यवनराज !
- एकम् इदं भारतं राष्ट्रम् , बहूनि चात्र राज्यान् , बहवश्च शासकाः ।

  यह भारत राष्ट्र एक है , यहाँ बहुत - से राज्य हैं और बहुत - से शासक हैं ।
- त्वं मैत्रीसन्धिना तान् विभज्य भारतं जेतुम् इच्छसि ।

  तुम मैत्री - सन्धि से उन्हें विभाजित करके भारत को जीतना चाहते हो

ज्ञानसिंधु कोचिंग क्लासेज अभ्यासेन विद्या ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम्

- आम्भीकः चास्य प्रत्यक्षं प्रमाणम् ।

  और आम्भीक इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है ।
- अलक्षेन्द्रः : भारतम् एकं राष्ट्रम् इति तव वचनं विरुद्धम् ।

  सिकन्दर - भारत एक राष्ट्र है , तुम्हारा यह कथन गलत है ।
- इह तावत् राजानः जनाः च परस्परं द्रुह्यन्ति ।

  यहाँ राजा और प्रजा परस्पर द्वेष करते हैं
- पुरुराजः : तत् सर्वम् अस्माकम् आन्तरिकः विषयः ।

  पुरुराज - वह सब हमारा आन्तरिक मामला है ।
- बाह्यशक्तेः तत्र हस्तक्षेपः असह्यः यवनराज !

  हे यवनराज ! उसमें बाह्य शक्ति का हस्तक्षेप सहन किए जाने योग्य नहीं है ।
- पृथग्धर्माः , पृथग्भाषाभूषा अपि वयं सर्वे भारतीयाः ।।

  पृथक् धर्म , पृथक् भाषा , पृथक् वेशभूषा होने पर भी हम सब भारतीय हैं ।
- विशालम् अस्माकं राष्ट्रम् ।

  हमारा राष्ट्र विशाल है
- तथाहि –

  कहा गया है -
- उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।

  जो समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में स्थित है
- वर्षं तद् भारतं नाम भारती तत्र सन्ततिः ।।

  क्योंकि, वह भारत नाम का देश है , जहाँ की सन्तान भारतीय है ।
- अलक्षेन्द्रः : अथ मे भारतविजयः दुष्करः ।

  सिकन्दर - तो फिर मेरी भारत - विजय कठिन है ।
- पुरुराजः : न केवलं दुष्करः असम्भवोऽपि ।

  पुरुराज - न केवल कठिन है , असम्भव भी है ।
- अलक्षेन्द्रः : (सरोषम्) दुर्विनीत , किं न जानासि ,

  सिकन्दर - रोषपूर्वक) हे दुष्ट | क्या तुम नहीं जानते हो
- इदानीं विश्वविजयिनः अलक्षेन्द्रस्य अग्रे वर्तसे ?

  इस समय (तुम) विश्व - विजेता सिकन्दर के सामने हो ?
- पुरुराजः : जानामि , किन्तु सत्यं तु सत्यम् एव यवनराज !

  पुरुराजः- जानता हूँ ; किन्तु यवनराज सत्य तो सत्य ही है ।
- भारतीयाः वयं गीतायाः सन्देशं न विस्मरामः ।

  पुरुराज - हम भारतीय गीता के सन्देश को नहीं भूले हैं ।
- अलक्षेन्द्रः : कस्तावत् गीतायाः सन्देशः ?

  सिकन्दर - गीता का सन्देश क्या है ?

- पुरुराजः : -श्रूयताम् ।

  पुरुराजः- सुनिए
- हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं

  मर गए तो स्वर्ग प्राप्त करोगे
- जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।

  अथवा जीत गए तो पृथ्वी का भोग करोगे ।
- तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय

  इसलिए हे अर्जुन !
- युद्धाय कृतनिश्चयः ॥

  (इच्छारहित , मोहरहित और सन्तापरहित) होकर युद्ध करो ।
- अलक्षेन्द्रः : (किमपि विचिन्त्य) अलं तव गीतया ।

  सिकन्दर –(कुछ सोचकर) , अपनी गीता को रहने दो ।
- पुरुराज ! त्वम् अस्माकं बन्दी वर्तसे ।

  पुरुराज, तुम हमारे बन्दी हो ।
- ब्रूहि कथं त्वयि वर्तितव्यम् ।

  बोलो , तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाए ?
- पुरुराजः : यथैकेन वीरेण वीरं प्रति ।

  पुरुराज जैसा एक वीर , (दूसरे) वीर के प्रति करता है ।
- अलक्षेन्द्रः : (पुरोः वीरभावेन हर्षितः)

  सिकन्दर- (पुरु के वीर - भाव से प्रसन्न होकर)
- साधु वीर ! साधु ! नूनं वीर असि ।

  वीर ! ठीक है ! तुम निश्चय ही वीर हो ।
- धन्यः त्वं , धन्या ते मातृभूमिः ।

  तुम धन्य हो , तुम्हारी मातृभूमि धन्य है ।
- (सेनापतिम् उद्दिश्य) सेनापते !

  (सेनापति को लक्ष्य करके) सेनापति !

- सेनापतिः : सम्राट !

  सेनापति - सम्राट् !
- अलक्षेन्द्रः :: वीरस्य पुरुराजस्य बन्धनानि मोचय ।

  सिकन्दर – वीर पुरुराज के बन्धन खोल दो
- सेनापतिः : यत् सम्राट् आज्ञापयति ।

  सेनापति – सम्राट की जो आज्ञा ।

- अलक्षेन्द्रः : (एकेन हस्तेन पुरोः द्वितीयेन च आम्भीकस्य हस्तं गृहीत्वा)

  सिकन्दर- (एक हाथ से पुरु के और दूसरे हाथ से आम्भीक के हाथ को पकड़कर)
- वीर पुरुराज ! सखे आम्भीक ! इतः परं वयं सर्वे समानमित्राणि ,

  वीर पुरुराज ! मित्र आम्भीक ! अब से हम सब समान मित्र हैं ।
- इदानीं मैत्रीमहोत्सवं सम्पादयामः ।

  अब हम मैत्री - महोत्सव मनाते हैं ।
- (सर्वे निर्गच्छन्ति)

  (सब निकल जाते हैं ।)

चतुर्थ : पाठः - प्रबुद्धो ग्रामीणः

(बुद्धिमान् ग्रामीण)

सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य - पुस्तक . ' संस्कृत खंड ' के ' प्रबुद्धो ग्रामीण : ' नामक पाठ से अवतरित है ।

- एकदा बहवः जनाः धूमयानम् (रेल) आरुह्य नगरं प्रति गच्छन्ति स्म ।

  एक बार बहुत - से मनुष्य रेलगाड़ी पर चढ़कर नगर की ओर जा रहे थे ।
- तेषु केचित् ग्रामीणाः केचिच्च नागरिकाः आसन् ।
- उनमें कुछ ग्रामीण और कुछ शहरी थे ।
- मौनं स्थितेषु तेषु एकः नागरिकः ग्रामीणान् उपहसन् अकथयत्

  उनके मौन रहने पर एक शहरी ने ग्रामीणों का उपहास करते हुए कहा --
- " ग्रामीणाः अद्यापि पूर्ववत् अशिक्षिताः अज्ञाश्च सन्ति ।

  " ग्रामीण आज भी पहले की तरह अशिक्षित और मूर्ख हैं ।
- न तेषां विकासः अभवत् न च भवितुं शक्नोति । "

  न उनका विकास हुआ और न हो सकता है । "
- " तस्य तादृशं जल्पनं श्रुत्वा कोऽपि चतुरः ग्रामीणः अब्रवीत् ,

  उसके इस प्रकार के कथन को सुनकर कोई चतुर ग्रामीण बोला—
- " भद्र नागरिक ! भवान् एव किञ्चित् ब्रवीतु

  " हे शिष्ट शहरी , आप ही कुछ कहें ;
- यतो हि भवान् शिक्षितः बहुज्ञः च अस्ति ।

  क्योंकि आप ही शिक्षित और बहुत जानकार हैं ।
- ' इदम् आकर्ण्य स नागरिकः सदर्प ग्रीवाम् उन्नमय्य अकथयत् ,

  " यह सुनकर उस शहरी ने घमण्ड के साथ गर्दन को ऊँचा उठाकर कहा
- "कथयिष्यामि, परं पूर्वं समयः विधातव्यः ।"

  " कहूँगा ; किन्तु पहले (कुछ) शर्त बद लेनी चाहिए । "

- तस्य तां वार्ता श्रुत्वा स चतुरः ग्रामीण अकथयत् ,

  " उसकी इस बात को सुनकर उस चतुर ग्रामीण ने कहा-
- “ भोः वयम् अशिक्षिताः भवान् च शिक्षितः ,

  " अरे हम अशिक्षित हैं और आप शिक्षित हैं ;
- वयम् अल्पज्ञा भवान् च बहुज्ञः ,

  हम कम जानते हैं और आप बहुत जानते हैं
- इत्येवं विज्ञाय अस्माभिः समयः कर्त्तव्यः ,

  ऐसा समझकर हमारे साथ शर्त लगानी चाहिए
- वयं परस्परं प्रहेलिकां प्रक्ष्यामः ।

  हम परस्पर पहेली पूछेगे ।
- यदि भवान् उत्तरं दातुं समर्थः न भविष्यति

  यदि आप उत्तर देने में समर्थ न होंगे
- तदा भवान् दशरूप्यकाणि दास्यति ।

  तो आप दस रुपये देंगे ।
- यदि वयम् उत्तरं दातुं समर्थाः न भविष्यामः

  यदि हम उत्तर देने में समर्थ न होंगे ,
- तदा दशरूप्यकाणाम् अर्धं पञ्चरूप्यकाणि दास्यामः ।"

  तो (हम) दस रुपये के आधे (अर्थात्) पाँच रुपये देंगे ।"
- " आं , स्वीकृतः समयः ” ,

  " हाँ , शर्त स्वीकार है "
- इति कथिते तस्मिन् नागरिके स ग्रामीणः नागरिकम् अवदत् ,

  उस शहरी द्वारा ऐसा कहे जाने पर , उस ग्रामीण ने शहरी से कहा-
- “ प्रथमं भवान् एव पृच्छतु ।

  " पहले आप ही पूछे ।
- " नागरिकश्च तं ग्रामीणम् अकथयत् ,

  और शहरी ने उस ग्रामीण से कहा-
- “ त्वमेव प्रथमं पृच्छ ” इति ।

  तुम ही पहले पूछो ।
- इदं श्रुत्वा स ग्रामीणः अवदत् “ युक्तम् , अहमेव प्रथम पृच्छामि ।”

  यह सुनकर वह ग्रामीण बोला" ठीक है , मैं ही पहले पूछता हूँ ।”
- अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः ।

  “-बिना पैरों का है , किन्तु दूर तक जाता है; साक्षर (अक्षरयुक्त) है , किन्तु पण्डित नहीं है ।
- अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः ॥

  मुखविहीन होने पर भी स्पष्ट बोलनेवाला है इसे जो जानता है , वह पण्डित है ।

- अस्या उत्तरं ब्रवीतु भवान् ।

  आप इसका उत्तर दें|
- नागरिकः बहुकालं यावत् अचिन्तयत् ,

  शहरी ने बहुत देर तक विचार किया ;
- परं प्रहेलिकायाः उत्तर दातुं समर्थः न अभवत् ,

  किन्तु (वह) पहेली का उत्तर देने में समर्थ नहीं हुआ ;
- अतः ग्रामीणम् अवदत् ,

  अतः ग्रामीण से बोला-
- अहम् अस्याः प्रहेलिकायाः उत्तरं न जानामि ।

  " मैं इस पहेली का उत्तर नहीं जानता हूँ । "
- इदं श्रुत्वा ग्रामीणः अकथयत् , यदि भवान् उत्तरं न जानाति ,

  यह सुनकर ग्रामीण ने कहा , यदि आप उत्तर नहीं जानते हैं
- तर्हि ददातु दशरूप्यकाणि ।

  तो दस रुपये दें ।
- अतः म्लानमुखेन नागरिकेण समयानुसारं दशरूप्यकाणि दत्तानि ।

  अत : खिन्न मुखवाले शहरी ने शर्त के अनुसार दस रुपये दिए ।
- पुनः ग्रामीणोऽब्रवीत् , " इदानीं भवान् पृच्छतु प्रहेलिकाम् । "

  फिर ग्रामीण बोला- " अब आप पहेली पूछे ।"
- दण्डदानेन खिन्नः नागरिकः बहुकालं विचार्य न काञ्चित् प्रहेलिकाम् अस्मरत् ,

  दण्ड देने से दुःखी शहरी बहुत समय तक विचार करके भी किसी पहेली को याद न कर सका ;
- अतः अधिकं लज्जमानः अब्रवीत् ,

  अतः अत्यधिक लज्जित होता हुआ बोला
- " स्वकीयायाः प्रहेलिकायाः त्वमेव उत्तरं ब्रूहि । "

  ' अपनी पहेली का उत्तर तुम ही दो !
- तदा स ग्रामीणः विहस्य स्वप्रहेलिकायाः सम्यक् उत्तरम् अवदत् ' पत्रम् ' इति

  " तब उस ग्रामीण ने हँसकर अपनी पहेली का सही - सही उत्तर दिया " पत्र " ।
- यतो हि इदं पदेन विनापि दूरं याति ,

  क्योंकि वह पैरों के बिना भी दूर तक जाता है
- अक्षरैः युक्तमपि न पण्डितः भवति ।

  अक्षरों से युक्त होने पर भी पण्डित नहीं होता ।
- एतस्मिन्नेव काले तस्य ग्रामीणस्य ग्रामः आगतः ।

  इसी समय उस ग्रामीण का गाँव आ गया ।
- स विहसन् रेलयानात् अवतीर्य स्वग्राम प्रति अचलत् ।

  वह हँसता हुआ रेलगाड़ी से उतरकर अपने गाँव की ओर चल पड़ा ।

- नागरिकः लज्जितः भूत्वा पूर्ववत् तूष्णीम् अतिष्ठत् ।
  शहरी लज्जित होकर पहले की तरह चुप बैठ गया ।
- सर्वे यात्रिणः वाचालं तं नागरिकं दृष्ट्वा अहसन् ।
  सारे यात्री उस वाचाल शहरी को देखकर हँसने लगे ।
- तदा स नागरिकः अन्वभवत् यत् ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति ।
  तब उसने अनुभव किया कि ज्ञान सर्वत्र सम्भव है ।
- ग्रामीणाः अपि कदाचित् नागरिकेभ्यः प्रबुद्धतराः भवन्ति ।
  ग्रामीण भी कभी शहरियों से अधिक बुद्धिमान् होते हैं ।

पंचम् पाठः - देशभक्तः चंद्रशेखरः

(देशभक्त चन्द्रशेखर)

सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य – पुस्तक के ' संस्कृत खंड ' के ' देशभक्त : चन्द्रशेखर : ' नामक पाठ से लिया गया है ।

(प्रथमं दृश्यम्)

- (स्थानम् - वाराणसीन्यायालयः , न्यायाधीशस्य पीठे एकः दुर्धर्षः पारसीकः तिष्ठति ,
  (स्थान - वाराणसी , न्यायालय । न्यायाधीश के आसन पर एक उच्छंखल पारसी बैठा है ।
- आरक्षकाः चन्द्रशेखरं तस्य सम्मुखम् आनयन्ति ।
  सिपाही चन्द्रशेखर को उसके सामने लाते हैं ।
- अभियोगः प्रारभते ।
  मुकदमा आरम्भ होता है ।
- चन्द्रशेखरः पुष्टाङ्गः , गौरवर्णः , षोडशवर्षीयः किशोरः ।
  चन्द्रशेखर पुष्ट अंगोंवाला , गोरे रंग का सोलह वर्षीय किशोर है ।
- आरक्षकः : श्रीमन् ! अयम् अस्ति चन्द्रशेखरः । अयं राजद्रोही ।
  सिपाही – श्रीमन् ! यह चन्द्रशेखर है । यह राजद्रोही है ।
- गतदिने अनेनैव असहयोगिनां सभायाम् एकस्य आरक्षकस्यदुर्जयसिंहस्य मस्तके
  पिछले दिन इसने ही असहयोगियों की सभा में एक सिपाही दुर्जयसिंह के मस्तक पर
- प्रस्तरखण्डेन प्रहारः कृतः येन दुर्जयसिंहः आहतः ।
  पत्थर के टुकड़े से प्रहार किया ,जिससे दुर्जयसिंह घायल हो गया ।
- न्यायाधीशः : (तं बालकं विस्मयेन विलोकयन्) रे बालक ! तव किं नाम ?
  न्यायाधीश- (उस बालक को आश्चर्य से देखते हुए) रे बालक ! तेरा क्या नाम है ?
- चन्द्रशेखरः : आजादः (स्थिरीभूय) ।
  चन्द्रशेखर आजाद (दृढ़ होकर) ।
- न्यायाधीशः : तव पितुः किं नाम ?
  न्यायाधीश - तेरे पिता का क्या नाम है ?

- चन्द्रशेखरः – स्वतंत्र:

  चन्द्रशेखर - स्वतन्त्र ।
- न्यायाधीशः : त्वं कुत्र निवससि ?

  न्यायाधीश - तुम कहाँ रहते हो ?
- तव गृहं कुत्रास्ति ?

  तुम्हारा घर कहाँ है ?
- चन्द्रशेखरः : कारागार एव मम गृहम् ।

  चन्द्रशेखर कारागार ही मेरा घर है ।
- न्यायाधीशः : (स्वगतम्) कीदृशः प्रमत्तः स्वतन्त्रतायै अयम् ?

  न्यायाधीश- (अपने मन में) यह स्वाधीनता के लिए कितना मतवाला है ?
- (प्रकाशम्) अतीव धृष्टः , उद्दण्डश्चायं नवयुवकः ।

  (प्रकट रूप में) यह नवयुवक अत्यधिक ढीठ और उद्दण्ड है ।
- अहम् इमं पञ्चदश कशाघातान् दण्डयामि ।

  मैं इसे पन्द्रह कोड़ों की सजा देता हूँ ।
- चन्द्रशेखरः : नास्ति चिन्ता ।

  चन्द्रशेखर चिन्ता नहीं है ।

(द्वितीयं दृश्यम्)

- (ततः दृष्टिगोचरो भवतः कौपीनमात्रावशेषः , फलकेन दृढं बद्धः चन्द्रशेखरः)

  (तब केवल लँगोट बाँधे , तख्ते से दृढ़ता से बंधे हुए चन्द्रशेखर
- कशाहस्तेन चाण्डालेन अनुगम्यमानः , कारावासाधिकारी गण्डासिंहश्च ।)

  और कोड़ा हाथ में लिए चाण्डाल का अनुगमन करते हुए जेलर गण्डासिंह दिखाई पड़ते हैं ।)
- गण्डासिंहः : (चाण्डालं प्रति) दुर्मुख ! मम आदेशसमकालमेव कशाघातः कर्त्तव्यः ।

  गण्डासिंह- (चाण्डाल से) हे दुर्मुख ! मेरे द्वारा आज्ञा देते ही कोड़े लगाना ।
- (चन्द्रशेखरं प्रति) रे दुर्विनीत युवक ! लभस्व इदानीं स्वाविनयस्य फलम् ।

  (चन्द्रशेखर से) हे उद्दण्ड युवक । अब तू अपनी उद्दण्डता का फल प्राप्त कर ।
- कुरु राजद्रोहम् ।

  कर राजद्रोह !
- दुर्मुख ! कशाघातः एकः (दुर्मुखः चन्द्रशेखरं कशया ताडयति) ।

  हे दुर्मुख ! एक कोड़ा मारो (दुर्मुख चन्द्रशेखर को कोड़े से मारता है)
- चन्द्रशेखरः : जयतु भारतम् ।

  चन्द्रशेखर - भारत को जय हो ।
- गण्डासिंहः : दुर्मुख ! द्वितीयः कशाघातः । (दुर्मुखः पुनः ताडयति ।)

  गण्डासिंह हे दुर्मुख ! दूसरा कोड़ा (मारो) । (दुर्मुख फिर से पीटता है ।)

- ताडितः चन्द्रशेखरः पुनः पुनः ' भारतं जयतु ' इति वदति ।

  पिटते हुए चन्द्रशेखर बार - बार ' भारतमाता की जय हो ' , ऐसा कहते हैं ।
- (एवं स पञ्चदशकशाघातैः ताडितः)

  (इस प्रकार वे पन्द्रह कोड़ों से पीटे जाते हैं ।)
- यदा चन्द्रशेखरः कारागारात् मुक्तः बहिः आगच्छति ,

  जब चन्द्रशेखर कारागार से मुक्त होकर बाहर आते हैं ,
- तदैव सर्वे जनाः तं परितः वेष्टयन्ति ,

  तब सारे लोग उन्हें चारों ओर से घेर लेते हैं ।
- बहवः बालकाः तस्य पादयोः पतन्ति ,

  बहुत - से बालक उनके पैरों पर गिर पड़ते हैं
- तं मालाभिः अभिनन्दयन्ति च ।

  और उनका मालाओं से अभिनन्दन करते हैं ।
- चन्द्रशेखरः : किमिदं क्रियते भवद्भिः ?

  चन्द्रशेखर - आप लोग यह क्या कर रहे हैं ?
- वयं सर्वे भारतमातुः अनन्यभक्ताः ।

  हम सभी भारतमाता के अनन्य भक्त हैं ।
- तस्याः शत्रूणां कृते मदीयाः , इमे रक्तबिन्दवः अग्निस्फुलिङ्गाः भविष्यन्ति ।

  उसके शत्रुओं के लिए मेरी, ये रक्त की बूंदें अग्नि की चिनगारियाँ हो जाएंगी ।
- (' जयतु भारतम् ' इति उच्चैः कथयन्तः सर्वे गच्छन्ति)

  [भारत को जय हो ' ऐसा उच्च स्वर से कहते (नारे लगाते) हुए सब चले जाते हैं|

अष्टमः पाठः - भारतीया संस्कृतिः

(भारत की संस्कृति)

सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य - पुस्तक के ' संस्कृत खंड ' के ' भारतीया संस्कृतिः ' नामक पाठ से उद्धृत है ।

- मानव - जीवनस्य संस्करणं संस्कृतिः ।

  मानव - जीवन को संवारना ही संस्कृति है ।
- अस्माकं पूर्वजाः मानवजीवन संस्कर्तुं महान्तं प्रयत्नम् अकुर्वन् ।

  हमारे पूर्वजों ने मानव - जीवन को सँवारने के लिए महान् प्रयत्न किया था ।
- ते अस्माकं जीवनस्य संस्करणाय

  उन्होंने हमारे जीवन को संवारने के लिए,

- यान् आचारान् विचारान् च अदर्शयन् तत् सर्वम् अस्माकं संस्कृतिः ।

  जिन आचरणों और विचारों को प्रदर्शित किया , वह सब (ही) हमारी संस्कृति हैं ।
- ' विश्वस्य स्रष्टा ईश्वरः एक एव '

  " विश्व का रचयिता ईश्वर एक ही है "
- इति भारतीय – संस्कृतेः मूलम् ।

  यह भारतीय संस्कृति का मूल है ।
- विभिन्नमतावलम्बिनः विविधैः नामभिः एकम् एव ईश्वरं भजन्ते ।

  विभिन्न मतों के अनुयायी अनेक नामों से एक ही ईश्वर का भजन करते हैं ।
- अग्निः , इन्द्रः , कृष्णः , करीमः , रामः , रहीमः , जिनः , बुद्धः , ख्रिस्तः , अल्लाहः

  अग्नि , इन्द्र , कृष्ण , करीम , राम , रहीम , जिन , बुद्ध , ईसा , अल्लाह
- इत्यादीनि नामानि एकस्य एव परमात्मनः सन्ति ।

  इत्यादि नाम एक ही ईश्वर के हैं ।
- तम् एव ईश्वरं जनाः गुरुः इत्यपि मन्यन्ते ।

  उसी ईश्वर को लोग ' गुरु ' के रूप में भी मानते हैं ।
- अतः सर्वेषां मतानां समभावः सम्मानश्च अस्माकं संस्कृतेः सन्देशः ।

  अतः सभी मतों के प्रति समान भाव और सम्मान (ही) हमारी संस्कृति का सन्देश है ।
- भारतीया संस्कृतिः तु सर्वेषां मतावलम्बिनां संगमस्थली ।

  भारतीय संस्कृति तो सभी मतों को मानने वालों की संगमस्थली है ।
- काले काले विविधाः विचाराः भारतीय - संस्कृतौ समाहिताः ।

  समय - समय पर भारतीय संस्कृति में विविध विचार आ मिले ।
- एषा संस्कृतिः सामासिकी संस्कृतिः

  यह संस्कृति समन्वयात्मक संस्कृति है ,
- यस्याः विकासे विविधानां जातीनां सम्प्रदायानां विश्वासानांच योगदानं दृश्यते ।

  जिसके विकास में विविध जातियों , सम्प्रदायों और विश्वासों का योगदान दृष्टिगोचर होता है ।
- अतएव अस्माकं भारतीयानाम् एका संस्कृतिः एका च राष्ट्रीयता ।

  अतएव हम भारतीयों की एक संस्कृति और एक राष्ट्रीयता है ।
- सर्वेऽपि वयं एकस्याः संस्कृतेः समुपासकाः , एकस्य राष्ट्रस्य च राष्ट्रियाः ।

  हम सभी एक संस्कृति के उपासक हैं और एक राष्ट्र के नागरिक हैं ।
- यथा भ्रातरः परस्परं मिलित्वा सहयोगेन सौहार्देन च परिवारस्य उन्नतिं कुर्वन्ति ,

  जिस प्रकार भाई - भाई परस्पर मिलकर सहयोग और प्रेम से परिवार की उन्नति करते हैं ,
- तथैव अस्माभिः अपि सहयोगेन सौहार्देन च राष्ट्रस्य उन्नतिः कर्त्तव्या ।

  उसी प्रकार हमें भी सहयोग और प्रेम से राष्ट्र की उन्नति करनी चाहिए ।
- अस्माकं संस्कृतिः सदा गतिशीला वर्तते ।

  हमारी संस्कृति सदा गतिशील है ।

- मानवजीवनं संस्कर्तुम् एषा यथासमयं नवां नवां विचारधारां स्वीकरोति ,

  मानव - जीवन को शुद्ध करने के लिए यह समय - समय पर नई - नई विचारधारा को स्वीकार करती है
- नवां शक्तिं च प्राप्नोति ।

  और नई शक्ति प्राप्त करती है ।
- अत्र दुराग्रहः नास्ति ,

  यहाँ हठधर्मिता नहीं है ।
- यत् युक्तियुक्तं कल्याणकारि च तदत्र सहर्षं गृहीतं भवति ।

  जो उचित और कल्याणकारी है , वह यहाँ हर्षपूर्वक स्वीकार होता है ।
- एतस्याः गतिशीलतायाः रहस्यं मानव - जीवनस्य शाश्वतमूल्येषु निहितम् ,

  इसकी गतिशीलता का रहस्य मानव - जीवन के सदा रहनेवाले आदर्शों में निहित है ;
- तद् यथा सत्यस्य प्रतिष्ठा , सर्वभूतेषु समभावः, विचारेषु औदार्यम् , आचारे दृढ़ता चेति ।

  जैसे कि सत्य की प्रतिष्ठा , सभी प्राणियों के प्रति समान भाव , विचारों में उदारता और आचरण की दृढ़ता में निहित है
- एषा कर्मवीराणां संस्कृतिः ।

  यह कर्मवीरों की संस्कृति है ।
- ' कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः '

  " इस लोक में कर्म करते हुए (मनुष्य) सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करें ",
- इति अस्याः उद्घोषः ।

  यह इसकी घोषणा है ।
- पूर्वं कर्म , तदनन्तरं फलम् इति अस्माकं संस्कृते नियमः ।

  पहले कर्म और उसके बाद फल - यह हमारी संस्कृति का नियम है ।
- इदानीं यदा वयं राष्ट्रस्य नवनिर्माणे संलग्नाः स्मः |

  इस समय जब कि हम राष्ट्र के नव - निर्माण में लगे हुए हैं|
- निरन्तरं कर्मकरणम् अस्माकं मुख्यं कर्त्तव्यम् ।

  निरन्तर कर्म करना हमारा मुख्य कर्तव्य है ।
- निजस्य श्रमस्य फलं भोग्यं ,

  अपने परिश्रम का फल भोगने योग्य है ,
- अन्यस्य श्रमस्य शोषणं सर्वथा वर्जनीयम् ।

  दूसरे के परिश्रम का शोषण सब प्रकार से वर्जित है ।
- यदि विपरीतम् आचरामः,
- यदि हम विपरीत आचरण करते हैं ,
- तदा न वयं सत्यं भारतीय - संस्कृतेः उपासकाः ।

  तब हम भारतीय संस्कृति के सच्चे उपासक नहीं है |
- वयं तदैव यथार्थं भारतीयाः , यदा अस्माकम् आचारे विचारे च , अस्माकं संस्कृतिः लक्षिता भवेत् ।

  हम तभी यथार्थ रूप में भारतीय हैं, जब हमारे आचार और विचार में , हमारी संस्कृति दिखाई दे ।

- अभिलाषामः वयं, यत् विश्वस्य अभ्युदयाय

  हम चाहते हैं , कि विश्व के उत्थान के लिए
- भारतीय संस्कृतेः, एषः दिव्यः सन्देशः लोके सर्वत्र प्रसरेत् ।

  भारतीय संस्कृति का, यह दिव्य सन्देश संसार में सर्वत्र फैले|

- " सर्वे भवन्तु सुखिनः

  सब सुखी हों ,
- सर्वे सन्तु निरामयाः ।

  सब रोगरहित हों ।
- सर्वे भद्राणि पश्यन्तु

  सब कल्याण देखें (पाएँ) ,
- मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥ "

  कोई भी दुःखी न हो ।

नवमः पाठः - जीवन सूत्राणि

जीवन - सूत्राणि नवमः पाठः

सन्दर्भ - प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य – पुस्तक के ' सस्कृत-भाग ' के ' जीवन - सूत्राणि ' नामक पाठ से अवतरित है ।

यहाँ यक्ष द्वारा पूछे गए प्रश्न और युधिष्ठिर द्वारा दिए गए उत्तर संगृहीत हैं ।

यक्ष प्रश्न पूछते हैं – किंस्विद् गुरुतरं भूमेः किंस्विदुच्चतरं च खात् ? भूमि से (भी) भारी क्या है ? आकाश से (भी) ऊँचा क्या है ? किंस्वित् शीघ्रतरं वातात् किंस्विद् बहुतरं तृणात् ? ।। 1 ।। वायु से (भी) शीघ्रगामी क्या है ? तिनकों से (भी) अधिक (असंख्य) क्या है ?
युधिष्ठिर उत्तर देते है – माता गुरुतरा भूमेः खात् पितोच्चतरस्तथा । माता भूमि से (भी) भारी है । पिता आकाश से (भी) ऊँचा है । मनः शीघ्रतरं वातात् चिन्ता बहुतरी तृणात्।।2 ।। मन वायु से (भी) शीघ्रगामी है । चिन्ता तिनकों से (भी) अधिक (दुर्बल बनानेवाली) है ।

यक्ष प्रश्न पूछते हैं –

किंस्वित् प्रवसतो मित्रं किंस्विन् मित्रं गृहे सतः ?

प्रवासी का मित्र कौन है ? गृह में निवास करते हुए अर्थात् गृहस्थ का मित्र कौन है ?

आतुरस्य च किं मित्रं किंस्विन् मित्रं मरिष्यतः ? ।। 3 ।।

रोगी का मित्र कौन है और मरनेवाले का मित्र कौन है ?

युधिष्ठिर उत्तर देते है –

सार्थः प्रवसतो मित्रं भार्या मित्रं गृहे सतः ।

सहयात्रियों का समूह प्रवासी का मित्र है । गृह में निवास करनेवाले अर्थात् गृहस्थ की पत्नी मित्र है ।

आतुरस्य भिषक् मित्रं दानं मित्रं मरिष्यतः।।4 ।।

रोगी का मित्र वैद्य है और मरनेवाले का मित्र दान है ।

यक्ष प्रश्न पूछते हैं –

किंस्विदेकपदं धर्म्यम् किंस्विदेकपदं यशः ?

धर्म का मुख्य स्थान क्या है ? यश का मुख्य स्थान क्या है ?

किंस्विदेकपदं स्वर्यम् किंस्विदेकपदं सुखम् ? ।। 5 ।।

स्वर्ग का मुख्य स्थान क्या है ? और सुख का मुख्य स्थान क्या है ?

युधिष्ठिर उत्तर देते है –

दाक्ष्यमेकपदं धर्म्यम् दानमेकपदं यशः ।

धर्म का मुख्य स्थान उदारता है , यश का मुख्य स्थान दान है ,

सत्यमेकपदं स्वयं शीलमेकपदं सुखम्।।6 ।।

स्वर्ग का मुख्य स्थान सत्य है और सुख का मुख्य स्थान शील है ।

यक्ष प्रश्न पूछते हैं –

धान्यानामुत्तमं किंस्विद् धनानां स्यात् किमुत्तमम् ?

अन्नों में उत्तम (अन्न) क्या है ? धन में उत्तम (धन) क्या है ?

लाभानामुत्तमं किं स्यात् सुखानां स्यात् किमुत्तमम् ? ।। 7 ।।

लाभों में उत्तम (लाभ) क्या है ? सुखों में उत्तम (सुख) क्या है ?

युधिष्ठिर उत्तर देते है –

धान्यानामुत्तमं दाक्ष्यं धनानामुत्तमं श्रुतम् ।

अन्नों में उत्तम (अन्न) चतुरता है । धनों में उत्तम (धन) शास्त्र है ।

लाभानां श्रेय आरोग्यं सुखानां तुष्टिरुत्तमा।।8 ।।

लाभों में उत्तम (लाभ) आरोग्य है । सुखों में उत्तम (सुख) सन्तोष है ।

यक्ष प्रश्न पूछते हैं –

किं नु हित्वा प्रियो भवति ? किन्नु हित्वा न शोचति ।

क्या त्यागकर (मनुष्य) प्रिय हो जाता है ? क्या त्यागकर शोक नहीं करता ?

किं नु हित्वार्थवान् भवति ? किन्नु हित्वा सुखी भवेत्।।9 ।।

क्या त्यागकर धनवान् होता है ? क्या त्यागकर सुखी हो जाता है ?

युधिष्ठिर उत्तर देते है –

मानं हित्वा प्रियो भवति क्रोधं हित्वा न शोचति ।
अभिमान छोड़कर (मनुष्य) प्रिय हो जाता है , क्रोध त्यागकर शोक नहीं करता है ,
कामं हित्वार्थवान् भवति लोभं हित्वा सुखी भवेत्।।10 ।।
कामना (इच्छा) त्यागकर धनवान् होता है और लोभ छोड़कर सुखी होता है ।

अभ्यास भाग- संस्कृत प्रश्नोत्तर (सभी पाठ)

आवश्यक बात - प्रिय विद्यार्थियों! यहाँ से बोर्ड परीक्षा में दो प्रश्न संस्कृत में पूछे जायेंगे तथा उनके उत्तर भी संस्कृत में देना होगा, जिसके लिए 2 अंक निर्धारित हैं, हम यहाँ पर सभी अति महत्वपूर्ण प्रश्नों का संकलन कर प्रस्तुत कर रहे हैं, ये प्रश्न बार -बार बोर्ड परीक्षा में पूछे जाते हैं।

- अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए -

1. वाराणसी नगरी कस्याः नद्याः कूले स्थिता ? / कुत्र स्थिता अस्ति ?
   उत्तर : वाराणसी गङ्गायाः नद्याः कूले स्थिता ।
2. वैदेशिका : पर्यटकाः कस्याः शोभाम् अवलोक्य वाराणसी प्रशंसन्ति ?
   अथवा कस्याः शोभाम् अवलोक्य वैदेशिका : पर्यटका : वाराणसी बहुप्रशंसन्ति ?
   उत्तर : गङ्गायाः शोभाम् अवलोक्य वैदेशिका : पर्यटका : वाराणसी प्रशंसन्ति ।
3. वाराणसी कस्याः भाषाया : केन्द्रम् अस्ति ?
   अथवा वाराणसी कस्य केन्द्रस्थलम्/ केन्द्रस्थली अस्ति ?
   उत्तर : वाराणसी संस्कृतभाषायाः केन्द्रस्थलम् अस्ति ।
4. वाराणस्यां कियन्त : विश्वविद्यालया : सन्ति ?
   अथवा वाराणस्यां कति विश्वविद्यालयाः सन्ति ?
   उत्तर : वाराणस्यां त्रयः विश्वविद्यालयाः सन्ति ।
5. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयः कस्यां नगर्यां विद्यते ?
   उत्तर : सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयः वाराणस्यां नगर्यां विद्यते ।
6. वाराणसी नगरी केषां / कस्य सङ्गमस्थली अस्ति ?
   अथवा का नगरी विविधधर्माणां सङ्गमस्थली अस्ति ?
   उत्तर : वाराणसी नगरी विविधर्माणां सङ्गमस्थली अस्ति ।
7. दाराशिकोह : कुत्र गत्वा भारतीय - शास्त्राणाम् अध्ययनम् अकरोत् ?
   अथवा दाराशिकोह : वाराणसीम् आगत्य किमकरोत् ?
   उत्तर : दाराशिकोह : वाराणसीं गत्वा भारतीय - शास्त्राणाम् अध्ययनम् अकरोत् ।

8. दाराशिकोहः कस्यां भाषायाम् उपनिषदाम् अनुवादम् अकारयत् ?

उत्तर : दाराशिकोह : पारसीभाषायाम् उपनिषदाम् अनुवादम् अकारयत् ।

9. संस्कृतविश्वविद्यालयः कस्यां नगर्यां विद्यते ?

उत्तर : संस्कृतविश्वविद्यालयः वाराणसीनगर्यां विद्यते ।

10. वाराणसी किमर्थं प्रसिद्धा ?

उत्तर : वाराणसी विद्या - दर्शन - साहित्य - धर्म - कला- -शिल्पार्थ प्रसिद्धा अस्ति ।

11. वैदेशिका : वाराणसी केन हेतुना आगच्छन्ति ?

अथवा वैदेशिकाः किमर्थं वाराणसीम् आगच्छन्ति ?

उत्तर : वैदेशिका : वाराणसी गीर्वाणवाण्या : अध्ययनाय आगच्छन्ति ।

12. कुत्र मरणं मङ्गलं भवति ?

उत्तर : वाराणस्यां मरणं मङ्गलं भवति ।

13. वाराणसी नगरी केषां कृते लोके विश्रुता अस्ति ?

उत्तर : इयं नगरी विद्याकलानां संस्कृतभाषायाः संस्कृतेश्च कृते प्रसिद्धा अस्ति ।

14. दाराशिकोहेन उपनिषदाम् अनुवादः कस्यां भाषायां कारित :?

उत्तर : दाराशिकोहेन उपनिषदाम् अनुवादः पारसी भाषायां कारितः ।

15. सिकन्दरः पुरुं कि प्रश्नम् अपृच्छत् ?

उत्तर : कस्तावद् गीतायाः सन्देशः ? इति ।

16. अलक्षेन्द्रः राज्ञा पुरुणा सह कीदृशं व्यवहारम् अकरोत् ?

उत्तर : अलक्षेन्द्रः राज्ञा पुरुणा सह मित्रवद् व्यवहारम् अकरोत् ।

17. पुरुराज : केन सह युद्धम् अकरोत् ?

उत्तर : पुरुराज : अलक्षेन्द्रेण सह युद्धम् अकरोत् ।

18. अलक्षेन्द्रः पुरोः केन ' पावेन हर्षितः अभवत् ?

उत्तर : अलक्षेन्द्रः पुरोः वीरभावेन हर्षितः अभवत् ।

19. भारतविजय : न केवलं दुष्कर : असम्भवोऽपि , कस्य उक्ति :?

उत्तर : भारतविजय : न केवलं दुष्करः असम्भवोऽपि , इति पुरुराजस्य उक्तिः ।

20. ' भारतम् एकं राष्ट्रम् इति विरुद्धम् ' कस्य उक्ति ?

उत्तर : ' भारतम् एकं राष्ट्रम् इति विरुद्धम् ' इयम् अलक्षेन्द्रस्य उक्तिः ।

21. गीतायाः कः सन्देशः ?

उत्तर : गीतायाः सन्देशः अस्ति - हतो वा प्राप्यसि स्वर्ग जित्वा भोक्ष्यसे महीम् ।

22. पुरुराज : गीतायाः के सन्देशम् अकथयत् ?

उत्तर : पुरुराजः गीतायाः ' हतो वा प्राप्यसि स्वर्ग जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ' इति सन्देशम् अकथयत् ।

23. वीर : केन पूज्यते ? *(Most Important)*

अथवा क ; वीरेण पूज्यते ?

उत्तर : वीरः वीरेण पूज्यते ।

24. अलक्षेन्द्रः कः आसीत् ? *(Most Important)*

उत्तर : अलक्षेन्द्रः यवनराजः आसीत् ।

25. अलक्षेन्द्रः सेनापतिं किम् आदिश ?

उत्तर : सेनापतिम् आदिशति यत् वीरस्य पुरुराजस्य बन्धनानि मोचय ।

26. पुरुराजः कः आसीत ? *(Most Important)*

उत्तर : पुरुराज : एक : भारतवीरः आसीत् ।

27. किं जित्वा भोक्ष्यसे महीम ?

उत्तर : युद्ध जित्वा भोक्ष्यसे महीम् ।

28. चन्द्रशेखरः कः आसीत् ? *(V.V. Most Important)*

उत्तर : चन्द्रशेखरः एकः प्रसिद्धः क्रान्तिकारी युवकः आसीत् ।

29. केन कारणेन चन्द्रशेखर न्यायालये आनीत :?

उत्तर : राजद्रोहस्य आरोपे चन्द्रशेखर : न्यायालये आनीत् ।

30.) चन्द्रशेखरः स्वपितुः नाम किम् अकथयत् ?

अथवा चन्द्रशेखरस्य पितुः किं नाम ?

अथवा स्वतन्त्रः कस्य पितु : नाम ?

उत्तर : चन्द्रशेखरः स्वपितु : नाम स्वतन्त्र ' इति अकथयत् ।

31. चन्द्रशेखरः स्वनाम किम् अकथयत् ?

उत्तर : चन्द्रशेखरः स्वनाम आजादः इति अकथयत् । *(Most Important)*

32. न्यायाधीश : चन्द्रशेखरं किम् अदण्डयत् ?

अथवान्यायाधीश : चन्द्रशेखरं कथम् अदण्डयत् ?

उत्तर : न्यायाधीश : चन्द्रशेखरं पञ्चदश कशाघातान् अदण्डयत् ।

33. यदा चन्द्रशेखरः कारागारात् बहिः आगच्छति तदा बालकाः किं कुर्वन्ति ?

उत्तर : यदा चन्द्रशेखरः कारागारात् बहिः आगच्छति तदा बालकाः तस्य पादयोः पतन्ति , तं मालाभिः अभिनन्दयन्ति च । '

34. कारागार एव मम गृहम् ' इति कः अवदत् ?

अथवा कारगार एव मम गृहम् ' कस्य वचनम् अस्ति ?

उत्तर : ' कारागार एव मम गृहम् ' इति चन्द्रशेखरः अवदत् ।

35. चन्द्रशेखरः स्वगृहं कुत्र किम् अवदत् ?

उत्तर : चन्द्रशेखर : स्वगृहं कारागारम् अवदत् ।

36. ' शत्रूणां कृते मदीयाः रक्तबिन्दवः अग्निस्फुलिंगाः भविष्यन्ति । ' इदं कस्य कथनमस्ति?

उत्तर : इदं चन्द्रशेखरस्य कथनम् अस्ति ।

37. चन्द्रशेखरस्य रक्तबिन्दवः अग्निस्फुलिङ्गा : केषां कृते भविष्यन्ति ?

उत्तर : चन्द्रशेखरस्य रक्तबिन्दव : अग्निस्फुलिङ्गाः शत्रूणां भविष्यन्ति ।

38. प्रति कशाघातपश्चात् चन्द्रशेखरः किम् अकथयत् ? *(Most Important)*

उत्तर : प्रति कशाघातपश्चात् चन्द्रशेखर : ' जयतु भारतम् ' इति अकथयत् ।

39. राष्ट्रभक्तः कः अस्ति ?

उत्तर : राष्ट्रभक्त : चन्द्रशेखरः अस्ति

40. कशयाताडित : चन्द्र पुन : पुन : किम् अवदत् ? *(Most Important)*

उत्तर : कशयाताडित : चन्द्रशेखरः पुन : पुनः अवदत् - जयतु भारतम् । इति ।

41. दुर्मुखः कः आसीत् ? *(Most Important)*

उत्तर : दुर्मुख : चाण्डाल : आसीत् ।

42. न्यायाधीश : कः आसीत् ?

उत्तर : न्यायाधीश : एक : दुर्धर्षः पारसीक : आसीत् ।

43. श्वेतकेतुः कः आसीत् ? *(Most Important)*

उत्तर : श्वेतकेतु आरुणेय आसीत् ।

44. तम् पिता किम् उवाच ?

उत्तर : तम् पिता उवाच , श्वेतकेतो ! वस ब्रह्मचर्य ।

45. सः कतिवर्ष : वेदानधीत्य एयाय ?

उत्तर : स : चतुर्विंशतिवर्षः वेदानधीत्य एयाय ।

46. केन सर्वं मृण्मयं विज्ञातं स्याद् ?

उत्तर : मृत्पिण्डेन सर्वं मृण्मयं विज्ञातं स्याद् ।

47. लोहमणिना सर्वं किं विज्ञातम् ?

उत्तर : लोहमणिना सर्व लोहमयं विज्ञातम् ।

48. भारतीयसंस्कृतेः किं तात्पर्यम् अस्ति ?

अथवा संस्कृतिशब्दस्य किं तात्पर्यम् ? *(Most Important)*

उत्तर : अस्माकं पूर्वजाः जीवनं संस्कर्तु यान् आचारान् विचारान् च अदर्शयन् तत् सर्वं भारतीय - संस्कृतेः तात्पर्यम् ।

49. भारतीयसंस्कृते : मूलं किम् अस्ति ? *(Most Important)*

अथवा कि भारतीयसंस्कृते : मूलम् ?

अथवा विश्वस्य स्रष्टा क :?

उत्तर : विश्वस्य स्रष्टा ईश्वर : एक एव अस्ति इति भारतीयसंस्कृते : मूलम् अस्ति

50. भारतीयसंस्कृते : क : दिव्यः (प्रमुख :) सन्देश : अस्ति ? *(Most Important)*

अथवा अस्माकं भारतीयसंस्कृते : क : सन्देशः ?

अथवा अस्माकं संस्कृते : किं सन्देशम् ?

उत्तर : सर्वेषां मतानां समभावः सम्मानश्च भारतीय - संस्कृतेः दिव्यः सन्देशः अस्ति ।

51. “ मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत् ” –कस्याः अस्तिएषः दिव्यः सन्देश :?

उत्तर : " मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत् " -एषः भारतीयसंस्कृतिः दिव्यः सन्देशः ।

52. भारतीया संस्कृतिः कीदृशी अस्ति / वर्तते ? *(Most Important)*

अथवा अस्माकं संस्कृतिः कीदृशी अस्ति ?

उत्तर : भारतीया संस्कृतिः सदा गतिशीला वर्तते ।

53. भारतीयसंस्कृते : क : अभिलाष :?

उत्तर : ' सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥ ' इति भारतीयसंस्कृते : अभिलाषः ।

54. भारतीय संस्कृती क : विशेषः गुणः अस्ति ?

उत्तर : भारतीय - संस्कृतौ सर्वेषां मतानां समभावः इति विशेष : गुणः अस्ति ।

55. ' सर्वे भवन्तु सुखिनः एषः दिव्य : सन्देश : कस्याः अस्ति ?

उत्तर : " सर्वे भवन्तु सुखिनः अस्माकं संस्कृते : सन्देशमस्ति

56. संस्कृतेः अर्थ : क :?

उत्तर : मानव जीवनस्य संस्करणं संस्कृतिः अस्ति ।

57. अस्माकं संस्कृते : क : नियम :?

उत्तर : पूर्व कर्म , तदनन्तरं फलम् इति अस्माकं संस्कृतेः नियमः ।

58. भारतीया संस्कृतिः केषां सङ्गमस्थली ? *(Most Important)*

उत्तर : भारतीया संस्कृति : सर्वेषां मतावलम्बितां सङ्गमस्थली ।

59. मनुष्यः किं हित्वा सुखी भवेत् ?

अथवा मनुष्य : किं हित्वा सुखी भवति ?

उत्तर : मनुष्य लोभं हित्वा सुखी भवेत् ।

60. वातात् शीघ्रतरं किं भवति ? *(Most Important)*

उत्तर : वातात् शीघ्रतरं मनः भवति ।

61. किंस्विद् गुरुतरा भूमेः ? अथवा भूमेः गुरुतरं किम् अस्ति ? *(Most Important)*

उत्तर : माता गुरुतरा भूमेः ।

62. गृहे सत : मित्रं किम् अस्ति ?

उत्तर : गृहे सत : मित्रं भार्या अस्ति ।

63. खात् / आकाशात् उच्चतरं किम् अस्ति ? *(Most Important)*

उत्तर : खात् / आकाशात् उच्चतरं पिता अस्ति ।

64. पिता कस्मात् उच्चतरः भवति ?

उत्तर : पिता खात् उच्चतरः भवति ।

65. आतुरस्य मित्रं किम् अस्ति ? *(Most Important)*

अथवा भिषक् कस्य मित्रं भवति ?

उत्तर : भिषक् आतुरस्य मित्रं भवति ।

66. मरिष्यत : किं मित्रं भवति ?

उत्तर : मरिष्यतः दानं मित्रं भवति ।

67. किंस्वित् शीघ्रतरं वातात् किं स्विद् बहुतरं तृणात् ?

उत्तर : मनः शीघ्रतरं वातात् चिन्ता बहुतरी तृणात् ।

68. तृणात् बहुतरं किम् अस्ति ?

उत्तर : तृणात् बहुतरं चिन्ता अस्ति ।

69. जन : किं हित्वा प्रियः भवति ?

अथवा किं हित्वा नरः प्रियो भवति ?

उत्तर : जनः मानं हित्वा प्रियो भवति ।

70. अनृतं केन जये ?

उत्तर : सत्येन अनृतं जयेत् ।

71. विदेशे मित्रं किम् अस्ति ?

उत्तर : विदेशे सार्थ : मित्रं भवति ।

72. सर्वेषु उत्तमं धनं किम् अस्ति ? *(Most Important)*

अथवा धनाना उत्तमं धनं किम् अस्ति ?
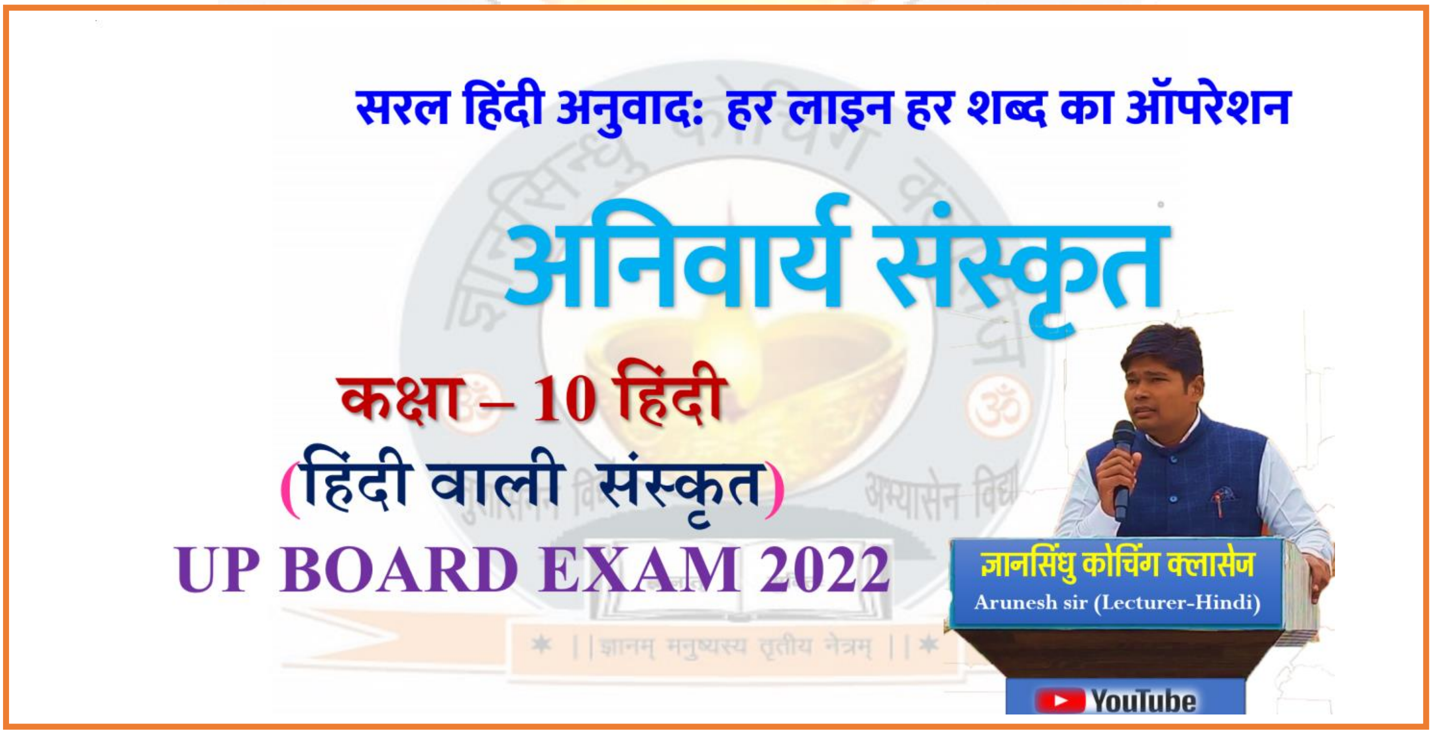
उत्तर : सर्वेषु उत्तमं धनं श्रुतम् अस्ति ।